Vijay Kumar Jha
Asso Prof
Deptt in History
V.S.J College Rajnagar
Degree Part III
Paper VIII

Arab League.

~~पाश्चेमी~~

पाश्चेमी एशिया के राष्ट्रवादी तत्व और वहाँ कि सरकारें यह जानती थी कि युद्ध समाप्त होते ही पाश्चेमी देशों का शिकंजा उन पर पहले कि अपेक्षा अधिक मजबूत किया जायेगा। अतः पाश्चेमी देशों के दबाव कम करने के लिये अरबों ने अपना एक संगठन कायम करने का निश्चय किया और 22 मार्च 1945 ई० को अरब लीग कि स्थापना इसी उद्येश्य कि पूर्ति के लिये किया गया था।

अरब लीग कि स्थापना अरबों कि राष्ट्रीयता के विकास का संकेत था अरबों में एकता स्थापित करने कि यह एक प्रयास था। इसका आरम्भ 19वी सदी में अरब जागरण में हुआ। इसका उद्येश्य चार सौ वर्षों से तुर्क साम्राज्य कि दासता का भार वहन करने वाले अरबों का स्वतंत्र होना था। ओटोमन सुल्तानों के समय अरबों में राजनीतिक एकता आना शुरू हो गया था। 1920-24 तक इस भावना कि आवश्यकता और भी बढ़ गई। 1936 ई० में सउदी अरब और इराक में एक संधि हुई जिसमें एकता कि भावना और भी प्रबल हो गया। यह निर्णय हुआ कि दोनों राष्ट्र आपसी झगड़े का निपटारा शांतिपूर्ण भाव से करेंगे और बाह्य आक्रमण के समय एक दूसरे का मदद करेंगे। 1944 ई० में सिकन्द्रिया में अरब एकता के लिये एक सम्मेलन बुलाया। मिस्र, इराक, सीरिया, लेबनान, जार्डन सउदी अरब और यमन ने भाग लिया। यह निर्णय हुआ कि अरब राज्यों का न तो कोई एकात्मक राज्य का संघ है और न संघात्मक।

अरब लीग के उद्येश्य :— इस लीग का उद्येश्य सदस्य राष्ट्रों के बीच हुये समझौतों को क्रियात्मक रूप देना एवं उसके आपसी संबंध को सुदृढ़ बनाना। राजनीतिक क्षेत्र में सहयोग करना आदि।

Sunday 02
JUNE 2019
Su Mo Tu We Th Fr Sa
30
2 3 4 5 6 7 8
9 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20
23 24 25 26 27

Scanned with Cam

Monday विभिन्न कार्यक्रमों पर विचार करना था साथ ही प्रभुता कि रक्षा करना तथा पराधीन अरबो को स्वतंत्र बनाना भी था। इस प्रकार अरबलीग राज्यों कि एकता के लिये प्रयास करने का एक साधन था

अरबलीग के संगठन में एक परिषद, कुछ विशेष समितियाँ और एक सचिवालय है जो काहिरा में है। इसका एक महासचिव है। अरब लीग के प्रथम महासचिव मिस्त्र कि नागरिक अब्दुल रहमान आजम पाशा था। परिषद कि बैठक वर्ष में दो बार होती है। परिषद का निर्णय सर्वसम्मति से माना जाता है। परिषद के राज्यों के विदेश मंत्री होते है 16 मार्च 1957 ई० को अरब राष्ट्रों ने एक सामूहिक सुरक्षा संधि लागू की जिसे आर्थिक सहयोग संधि कहते है। संधि के अनुसार एक सामूहिक प्रतिरक्षा परिषद बनाई गई जिसमे सदस्य देशों के विदेश मंत्री और प्रतिरक्षा मंत्री को सदस्य बनाया गया। परिषद मस्जिद के नियंत्रण में रहता है। एक स्थायी सैनिक आयोग का निर्माण किया गया जिसमें सम्मिलित देशों के सेनाध्यक्ष रखे गये।

अरबलीग के कार्य :— अरबलीग के दो कार्य थे राजनीतिक एवं गैर राजनीतिक। पराधीन राज्यों को सुरक्षा दिलाना अरब राज्यों का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य था सन 1945 में अरबलीग कि प्रथम बैठक काहिरा में हुई जिसमे अरब राज्यों के स्वतंत्रता पर विचार किया गया। निर्णय हुआ कि फ्रांस अरब राज्यो से जहाँ जहाँ उसका प्रभाव कायम है अपनी सेनायें वापस बुला ले। अरब लीग ने दूसरी राजनीतिक समस्या ट्रीपोली कि समस्या थी अरब लीग ने इसके विभाजन का घोर विरोध किया इससे संबद्ध प्रस्ताव में कहा गया कि यदि लिबिया का बटवारा किया गया तो सम्पूर्ण अरब राज्य इसका विरोध करेंगे। उनका कथन था कि लिबिया के बारे में जो भी निर्णय हो वह लिबिया के परामर्श से। अरब लीग में तीसरा समस्या फिलिस्तीन का था यहाँ अरबों ने यहूदी राज्य कि स्थापना का विरोध कर रहे थे। नवम्बर 1945 में आंग्ल अमेरिका कमीशन के प्रस्तावों कि जाँच के लिये लीग ने अपनी ओर से एक आयोग कि नियुक्ति की। अरब प्रतिनिधियों द्वारा फिलिस्तीन के लिये एक सामान्य आयोग किया गया, एक फिलिस्तीनी कार्यकारिणी का निर्माण हुआ

लोगो ने मिस्र से ब्रिटिश सेना को हटाने का आन्दोलन Tuesday अरबलीग ने अपनी सहायता समर्थन से मिस्र के राष्ट्रीय आन्दोलन को और मजबूत बनाया।

और राजनीतिक कार्य :- गैरराजनीतिक क्षेत्र में अरबलीग को कुछ सफलता अवश्य मिली। अरबदेशों में सांस्कृतिक और तकनीक संबंधी सहयोग कि भावना कायम करने में अरबलीग कि सफलता मिली। अरब राज्यों के बीच ज्ञान का आदान-प्रदान हुआ। अरबी भाषा के पाण्डुलिपियों की रक्षा का यत्न किया गया। राज्य में एक समाचार एजेन्सी कि स्थापना किया गया। आर्थिक सहयोग कि भावना जगाई गई। 1945 ई० में अरबलीग के अधीन एक आर्थिक एवं कृषि संबंधी कमेटी बनाई गई। इसकी शाखाएँ विश्व के सभी देशों कि राजधानियों में स्थापित किया गया।

अरबलीग राष्ट्रवाद का चरम पर पहुँच गया किंतु पारस्परिक झगड़ों के कारण अरबलीग को वांछित सफलता नहीं मिल सका। अरबलीग कि एकता बहुत दिनों तक नहीं चल सका और उत्साह ठंढा पर गया फलतः अरब लीग कि कमजोरी प्रगट हो गई। पश्चिमी शक्तियां सदैव अरब लीग में वैमनस्यता पैदा करने कि काम करता रहा। इससे अरब जगत के एकता को ठेस पहुँची। कालान्तर में सेण्टो संगठन ने भी अरबलीग को नुकसान पहुँचाया। कुछ अरब राज्य मिलकर एक अलग संघ बना लिया और अरब गणराज्य कि स्थापना हुई जिससे अरबलीग के महत्व कम हो गया।

अरब में आपसी प्रतिद्वन्दिता कि भावना एकता को समाप्त कर दिया और द्वितीय विश्व युद्ध के बाद अरब में कई क्रांतियां होती रही। अमेरिका, ब्रिटिश गुप्त सदैव अरबों को लड़ाते-भिड़ाते रहे और अरबों के उत्थान में अनेक बाधा उत्पन्न किये। अरब इजरायल युद्ध के समय अरबों ने जो एकता दिखायी थी वह युद्ध के बाद समाप्त हो गया और एकबार फिर अरब एकाकीपन में आ गया।

JUNE 2019
Su Mo Tu We Th Fr Sa
30
2 3 4 5 6 7 8
9 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22
23 24 25 26 27 28 29

Scanned with Can